मुबारक हो

स्माइल प्लांटर अरुण

What nonsense! publications

An imprint of Kingdom of Smiles

बच्चे का रोना सुनकर विलास खुश हो गया.
वह बड़ी उत्सुकता से डॉक्टर का ऑपरेशन थिएटर के बाहर आने का इंतजार करने लगा. फिर दरवाजा खुला, डॉक्टर आए, मुस्कुराए और कहा, "मुबारक हो."
विलास की खुशी बड़ी. वह डॉक्टर के अगले शब्द सुनने के लिए बेचैन हो रहा था.
डॉक्टर ने कहा, "आपको Reason हुआ है."
"Reason?" विलास सोच में पड़ गया.

कुछ महीनों बाद

विलास और पिंकी ने अपने बच्चे का नाम विपिन रखा. विलास विपिन के साथ खेल रहा था जब उसे फोन आया. उसने उठाया. बॉस ने अर्जेंट मीटिंग बुलाई थी. विलास चीड़ गया. सैटरडे को भी कोई काम करता है भला. उसने बॉस से कहा, "इतने छोटे से बच्चे को घर में अकेला छोड़ना..."
उतना बोलना ही काफी था. वह मुस्कुराया.
"किसका फोन है." किचन से पिंकी की आवाज़ आई.

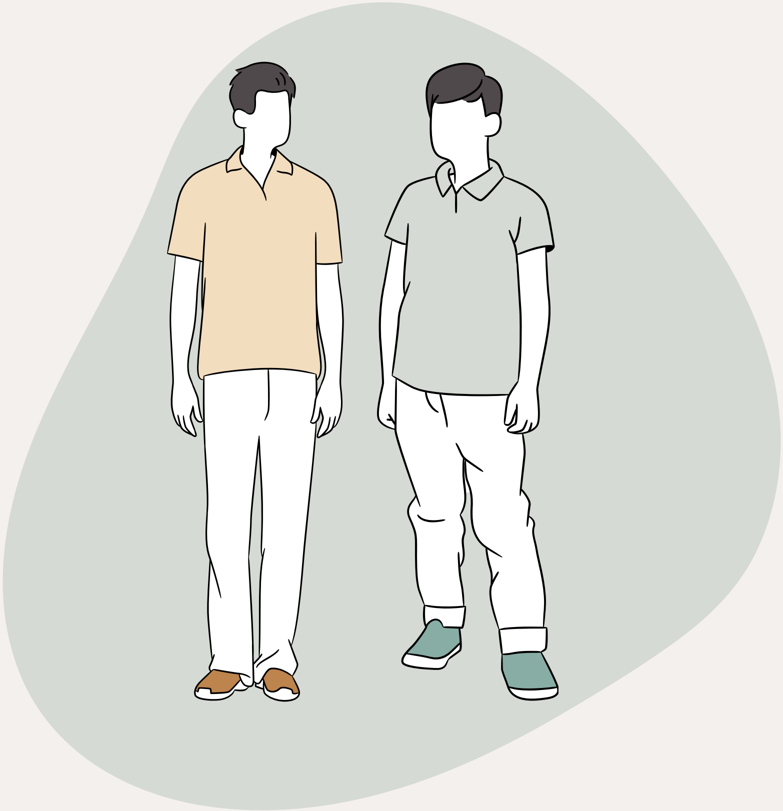

कुछ महीनों बाद

"चले?"

विलास के दो दोस्त उसके घर आए थे. एक के हाथ में बल्ला दूसरे के हाथ में गेंद थी. विलास को क्रिकेट देखना ज्यादा पसंद था खेलना नहीं. उसने कहा, "विपिन को डॉक्टर के यहां ले जाना है. उसकी तबीयत ठीक नहीं." उसे लगा दोस्त नाराज होंगे पर वह मान गए और चले गए.

कुछ महीनों बाद

विलास के माता-पिता उसके घर आए थे. उन्होंने अपने गांव के घर की छत बनवाने की बात निकाली. विलास ने कहा, "विपिन के स्कूल के एडमिशन में पैसे लग गए. थोड़ा मुश्किल है."

कुछ महीनों बाद

विलास को देर हो गई थी और उसे पता था. इसीलिए उसके ऑपरेशन थिएटर पहुंचने के बाद जब उसे डॉक्टर ने प्रश्न भरी निगाहों से देखा उसने तुरंत जवाब दिया,

"बच्चे को स्कूल छोड़ना था. इसलिए..."

"पापा."

विलास आवाज की तरफ मुड़ा. विपिन अपने दादा
दादी के साथ वही बेंच पर बैठा था. विलास की बोलती
बंद हो गई. उसने अपना सर शर्म से झुका लिया.
डॉक्टर ने कहा, "कोई बात नहीं. आपको...एक और
Reason मिल गया. मुबारक हो."
यह सुनते ही विलास खुशी के मारे कूदने लगा.

KINGDOM OF SMILES

www.thekingdomofsmiles.com